सीएसआईआर-निस्ट ने अपने डॉ. जे एन बरूवा सभागार में 20 दिसंबर, 2012 को 'सामाजिक विकास के लिए वैज्ञानिक पहल' पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन पूर्वोत्तर परिषद, शिलांग के सदस्य तथा मुख्य अतिथि श्री पीपी श्रीवास्तव और अन्य अतिथियों ने दीप जलाकर किया। सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पीजी राव ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। इस मौके पर मुख्य अतिथि ने 'डोयेन ऑफ सीएसआईआर-निस्ट फेमिली - ए फेस्ट्सक्रिफ्ट ऑन डॉ. पीजी राव' शीर्षक एक विशेष पुस्तक को जारी किया। इस पुस्तक को सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पीजी राव के सम्मान में प्रकाशित किया गया है, जिन्होंने उल्लेखनीय अवदान के साथ ही न सिर्फ संस्थान बल्कि समूचे पूर्वोत्तर का नेतृत्व दस वर्षों से ज्यादा समय तक किया है। वे 31 दिसंबर, 2012 को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि समाज की भलाई के लिए शोध उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि शैक्षणिक क्षेत्र के लिए। उन्होंने शैक्षणिक व शोध कार्यों के लिए सीएसआईआर-निस्ट की प्रशंसा करने के साथ ही इसे भविष्य में भी बरकरार रखने का आग्रह किया। जाने-माने अतिथि तथा ऊपरी असम के आयुक्त श्री सैयद इफ्तीकार हुसैन ने अपने संबोधन में डॉ. राव एवं सीएसआईआर-निस्ट के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि भविष्य में वे सीएसआईआर-निस्ट को क्षेत्रीय समस्याओं जैसे असुरक्षित और प्रदूषित पेयजल की समस्या पर कार्य करते हुए देखना चाहते हैं। डॉ. राव ने कहा कि सीएसआईआर-निस्ट हमेशा समस्याओं का समय से पहले समाधान करने की दिशा में कार्य किया है, जैसा कि 40 वर्ष पहले ही क्षेत्रीय समस्याओं को दूर करने के लिए कम लागत वाले बेंबोक्रीट हाऊस व वाटर फिल्टर केंडल आदि तकनीक को विकसित कर लिया गया है।

संगोष्ठी में कुल 6तकनीकी सत्र हुए, जिसमें कृषि तकनीक पर पहले सत्र की अध्यक्षता बिलासपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जीडी शर्मा ने की। इस सत्र में सीएसआईआर-आईआईसीटी, हैदराबाद के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. यूएसएन मूर्ती ने 'कृषि तकनीक-निस्ट की भविष्य की संभावना' शीर्षक व्याख्यान दिया। प्रो. शर्मा की अध्यक्षता में जीव-विज्ञान पर हुए दूसरे सत्र में जैव-विविधता व जैव-संसाधन, बैंकाक, थाइलैंड के बीईडीओ विशेषज्ञ डॉ. नपावर्न नोपारत्नापोर्न ने 'जैव-संसाधन व जैव-विविधता : शोध से आर्थिक विकास तक' शीर्षक एक व्याख्यान प्रदान किया। रसायन विज्ञान पर हुए तीसरे सत्र की अध्यक्षता जाने-माने आईएनएई प्रोफेसर डॉ. केवी राघवन ने की। इस सत्र में ईस्ट चाइना नार्मल विश्वविद्यालय, शंघाई, चीन के प्रो. वेनहो हु ने 'नोवल मल्टी-कंपोनेंट रिएक्शन्स वाया एक्टिव इंटरमेडिएट ट्रेपिंक प्रोसेस' शीर्षक व्याख्यान प्रदान किया। अभियांत्रिकी विज्ञान पर चौथे सत्र की अध्यक्षता आईसीटी, मुंबई के वीजी गाईकरर ने की। इस सत्र में डॉ. केवी राघवन ने 'सोशिएटल रोल इन शेपिंग ग्रीन प्रोसेस आप्शन्स - फार्मा एंड एग्रोकेमिकल केस स्टडीज' विषय पर व्याख्यान प्रदान किया। भू-विज्ञान पर पांचवें सत्र की अध्यक्षता आईएसआर, अहमदाबाद के महानिदेशक डॉ. बीके रस्तोगी ने की। इस सत्र में सीएसआईआर के जाने-माने वैज्ञानिक प्रो. वीपी डिमरी ने 'सीओ2 जीओसीक्वेस्ट्रेशन फॉर सस्टेनेबल ग्रीन अर्थ' विषय पर व्याख्यान दिया। इसी सत्र में डॉ. रस्तोगी ने 'पूर्वोत्तर के सतत विकास के लिए भूकंप के खतरे को दूर करने' विषय पर एक संक्षिप्त प्रदर्शन करके दिखाया। सामग्री विज्ञान पर छठे सत्र की अध्यक्षता सीसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के पूर्व निदेशक डॉ. टीसी राव ने की। इस सत्र में नॉन फेरस मेटेरियल्स टेक्नालॉजी डेवलपमेंट सेंटर, हैदराबाद के निदेशक डॉ. के बालासुब्रमण्यम ने 'खनिज और पदार्थ (एनईआर) के गुणवत्ता संपन्न उत्पाद' विषय पर व्याख्यान दिया। सीएसआईआर-निस्ट के पूर्व निदेशक डॉ. जी त्यागराजन ने वीडियो कांफ्रेसिंग के जरिए उपस्थित लोगों को संबोधित किया। डॉ. त्यागराजन ने विविध क्षेत्रों में संस्थान के सफल कार्यों तथा संगोष्ठी के आयोजन की प्रशंसा करते हुए सामाजिक विकास के लिए और ज्यादा वैज्ञानिक निवेश को बढ़ावा देने पर बल दिया। संगोष्ठी में वैज्ञानिकों, प्रोफेसरों, चीन और थाईलैंड के प्रतिनिधियों, आमंत्रित अतिथियों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और अन्य संबंद्ध पक्षों ने हिस्सा लिया।

'आगे देखो' कार्यक्रम आयोजित

कैप्शन - बायें : सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पीजी राव (एकदम बायें) की उपस्थिति में सीएसआईआर के डीजी व डीएसआईआर के सचिव तथा मुख्य अतिथि प्रो. समीर के भट्टाचार्य (बायें से दूसरे) फुंगी डेस्ट्रक्ट नामक फफूंदी रोधी जड़ी-बूटीय औषधि को जारी करते हुए। मंच पर सम्मानित अतिथि तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के बीआर अंबेडकर सेंटर फॉर बायोमेडिकल रिसर्च के प्रो. बानी ब्रह्मचारी (दायें से तीसरे) भी दिख रहे हैं।

दायें : प्रो. वानी भट्टाचार्य द्वारा 'प्रभावी वैज्ञानिक लेखन' पुस्तक को जारी किये जाने का दृश्य।

सीएसआईआर-निस्ट ने डॉ. जे एन बरूवा सभागार में 26दिसंबर, 2012 को 'आगे देखो' कार्यक्रम का आयोजन किया। सीएसआईआर के डीजी व डीएसआईआर के सचिव प्रो. समीर के भट्टाचार्य और दिल्ली विश्वविद्यालय के बीआर अंबेडकर सेंटर फॉर बायोमेडिकल रिसर्च के प्रो. वानी ब्रह्मचारी क्रमश: मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए सीएसआईआर-निस्ट के निदेशक डॉ. पीजी राव ने 2002-2012 दशक के दौरान सीएसआईआर-निस्ट द्वारा किये गये कार्यों और 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान किये जाने वाले कार्यों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने वैज्ञानिकों से 13वीं पंचवर्षीय योजना के लिए योजना बनाने तथा समाज की भलाई के लिए कार्य करने का आग्रह किया। इस संदर्भ में सीएसआईआर-निस्ट द्वारा कई कदम उठाये जाने की जानकारी भी उन्होंने दी। इस दिशा में हरेक दिन 40,000 ट्यूब की क्षमता वाले जड़ी-बूटीय दवा प्रसंस्करण इकाई की स्थापना पहला कदम है। इस इकाई का उद्घाटन प्रो. समीर के भट्टाचार्य ने किया। उन्होंने 'फुंगी डेस्ट्रक्ट' (सीएसआईआर-निस्ट द्वारा विकसित फफूंदी रोधी जड़ी-बूटीय मिश्रण) और 'फुंगी डेस्ट्रक्ट' पर एक प्रचार पुस्तिका को भी जारी किया। प्रो. भट्टाचार्य ने 'सुरूजमुखी' शीर्षक 100 केडब्ल्यूपी क्षमता वाले आफग्रिड सोलर पीवी पावर प्लांट का उद्घाटन भी किया।

प्रो. वानी ब्रह्मचारी ने संस्थान के बायोटेक्नालॉजी इकाई में शामिल किये गये सभी ढांचागत व अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त व पूरी तरह से अत्याधुनिक एप्लाइड माइक्रोबायोलॉजी ब्लॉक का उद्घाटन किया। इस ब्लॉक में लेवल II स्तर की एक बीएसएल प्रयोगशाला है। उन्होंने इस मौके पर श्रीमती प्रमिला मजुमदार और श्री बिमान बसु द्वारा संपादित तथा सीएसआईआर-निस्ट द्वारा प्रकाशित 'प्रभावी वैज्ञानिक लेखन' शीर्षक पुस्तक को भी जारी किया। इस पुस्तक को विज्ञान को लोकप्रिय बनाने तथा उभरते वैज्ञानिक लेखकों व शोधकर्ताओं की मदद के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया है।

प्रो. समीर के भट्टाचार्य ने सीएसआईआर-निस्ट के शोध कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि पूर्वोत्तर और यहां के लोगों के सामाजिक विकास और शोध के जरिए सीएसआईआर-निस्ट ने अपनी स्थापना को सार्थक किया है।

'गठिया रोधी' और 'फुंगी डेस्ट्रक्ट' पर कोलकाता में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

सीएसआईआर-निस्ट में उत्पादित दो जड़ी-बूटीय उत्पाद 'गठिया रोधी' और 'फुंगी डेस्ट्रक्ट' पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 11 फरवरी, 2013 को पूर्वी भारत के एक अधिकृत वितरक सारदा क्लीनिक्स प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से कोलकाता में किया गया। कार्यक्रम में कोलकाता के प्रेस और मीडिया के लोगों ने भारी संख्या में हिस्सा लिया। सीएसआईआर-निस्ट के प्रभारी निदेशक डॉ. आर सी बरूवा के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम ने मीडिया के लोगों के ढेर सारे सवालों का जवाब दिया और उन्हें भारत तथा विदेश के विभिन्न रोगियों से मिले अच्छे विचारों से अवगत कराया।

'पूर्वोत्तर क्षेत्र में आईपीआर संवेदनशीलता' पर कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

सीएसआईआर-निस्ट ने 'पूर्वोत्तर क्षेत्र में आईपीआर संवेदनशीलता' पर एक दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 13 फरवरी, 2013 को डॉ. जे एन बरूवा सभागार में किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-निस्ट के प्रभारी निदेशक डॉ. आरसी बरूवा ने की, जिसमें सीएसआईआर-आईआईसीटी, हैदराबाद के मुख्य वैज्ञानिक व बायोलॉजिकल साइंसेस के प्रमुख डॉ. यूएसएन मुर्ति मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

बायें: सीएसआईआर-निस्ट के प्रभारी निदेशक डॉ. आर सी बरूवा, विशेषज्ञों और आयोजन टीम के साथ कार्यशाला के प्रतिभागी दिख रहे हैं।
दायें : कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मंच पर बैठे हुए अतिथियों में (दायें से) डॉ. आर एल बेजबरूवा, प्रमुख-आई एंड बीडी और समन्वयक, डॉ. आर सी बरूवा, प्रभारी निदेशक, सीएसआईआर-निस्ट तथा डॉ. यूएसएन मुर्ति, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईआईसीटी और मुख्य अतिथि दिख रहे हैं।

डॉ यूएसएन मूर्ति ने अपने संबोधन में किसी के भी बौद्धिक कार्य के संरक्षण पर जोर दिया। उन्होंने किसी भी देश के पारंपरिक व सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर जोर देते हुए कहा कि वर्षों पुरानी जानकारी और संस्कृति, जो आज भी उपयोगी है, का संरक्षण करना हरेक नागरिक का कर्तव्य है। पहले तकनीकी सत्र में तेजपुर विश्वविद्यालय के आईपीआर प्रकोष्ठ की शोध अधिकारी सुश्री जूरी बरबरूवा सैकिया ने 'आईपीआर का परिदृश्य और ट्रेडमार्को के संरक्षण में इसकी भूमिका' पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा संगठन (एनआईपीओ), नयी दिल्ली के निदेशक डॉ. टी सी जेम्स ने 'कॉपीराइट और संबंधित अधिकार' पर चर्चा की। तीसरे सत्र में में भारतीय पेटेंट कार्यालय, कोलकाता के सहायक पेटेंट व डिजाइन नियंत्रक श्री माधुर्य ठाकुर ने 'भारतीय पेटेंट प्रणाली' पर चर्चा की। चौथे सत्र में डॉ. जेम्स ने 'ज्योग्राफिकल इंडिकेशन्स – आधारभूत और भारत के क्षेत्र में इसके बढ़ते महत्व' के बारे में बताया। पांचवें सत्र में गौहाटी विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान के प्रो. एस के बरठाकुर ने 'पारंपरिक जानकारी वनाम उपयोगिता, सुरक्षा और जैव-विविधता संरक्षण' के बारे में जानकारी दी। प्रतिभागियों के बीच एक लघु लिखित क्वीज का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में कुल 65 यूजी/पीजी विद्यार्थियों, विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों तथा असम व नगालैंड के संस्थानों के संकाय सदस्यों और आविष्कारकों ने हिस्सा लिया।

वैज्ञानिक संचार पर प्रशिक्षण

सीएसआईआर-निस्ट ने 18से 21 फरवरी, 2013 के दौरान विद्यार्थियों, फ्रीलांसरों और उत्तर पूर्व भारत के बेरोजगार लोगों की भलाई के लिए वैज्ञानिक संचार पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान और तकनीक विभाग (डीएसटी), नयी दिल्ली के अंतर्गत राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (आरवीपीएसपी) के सहयोग से किया गया था। उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं तकनीक परिषद (यूसीओएसटी) के महानिदेशक डॉ. राजेंद्र डोभल 18फरवरी को आयोजित उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट के प्रभारी निदेशक डॉ. आर सी बरुवा ने वैज्ञानिक संचार के महत्व और समाज में विज्ञान को बढ़ावा देने की प्रासंगिकता पर जोर दिया। उद्घाटन सत्र के बाद आयोजित एक विशेष सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. डोभल ने 'विज्ञान को बढ़ावा देने में विज्ञान व तकनीक परिषद की भूमिका' के बारे में बताया। उन्होंने यूसीओएसटी के उद्देश्य, रणनीति, मुद्दे, अनोखे पहल और उपलब्धियों का उल्लेख भी किया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों जैसे ईआईए, प्रदूषण नियंत्रण, औषधीय एवं सुगंधित पौधा, मौसम में बदलाव, कीटनाशकों के जैवपतन आदि में यूसीओएसटी के विभिन्न शोध व विकास परियोजनाओं के बारे में भी जानकारी दी।

(बायें) : कार्यशाला के प्रतिभागी मुख्य अतिथि डॉ. राजेंद्र डोभल, सीएसआईआर-निस्ट के प्रभारी निदेशक डॉ. आर सी बरुवा और आयोजन टीम के साथ। (दायें) उद्घाटन सत्र में मंच पर (दायें से) डॉ. आर डोभल, डीजी, यूसीओएसटी, उत्तराखंड, डॉ. आर सी बरुवा, प्रभारी निदेशक, सीएसआईआर-निस्ट और डॉ. आर एल बेजबरूवा, प्रमुख -आई एंड बीडी दिख रहे हैं।

प्रशिक्षण के पहले दिन वैज्ञानिक संचार और वर्तमान में इसकी जरूरत पर विभिन्न व्याख्यानों के जरिए जोर दिया गया। सीएसआईआर-निस्ट के पूर्व वैज्ञानिक श्री एके हजारिका ने 'वैज्ञानिक संचार में शोध संगठनों की भूमिका-सीएसआईआर-निस्ट अनुभव' पर, सीएसआईआर-एनआईएससीएआईआर, नयी दिल्ली के साइंस रिपोर्टर के संपादक श्री एचजे खान ने 'विज्ञान का संदेश देने' पर और एनसीएसटीसी अवार्ड विजेता व सीएसआईआर-एनआईएससीएआईआर, नयी दिल्ली के साइंस रिपोर्टर के पूर्व वैज्ञानिक तथा संपादक श्री बिमान बसु ने 'लोकप्रिय विज्ञान लेखन : क्यों और कैसे' पर व्याख्यान दिया।

दूसरे दिन के प्रशिक्षण में उपलब्ध विभिन्न मीडिया पर ध्यान केंद्रित किया गया। तेजपुर विश्वविद्यालय के मास कम्यूनिकेशन और पत्रकारिता विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. बाला लखेंद्र ने 'मीडिया के जरिए वैज्ञानिक संचार', सीएसआईआर-निस्ट के योजना इकाई के प्रमुख डॉ. पीसी नेउग ने 'इलेक्ट्रानिक मीडिया के लिए वैज्ञानिक कार्यक्रम' के बारे में बताया। एनसीएसटीसी अवार्ड विजेता व असमिया पत्रिका मौचाक तथा नतुन आविष्कार के संपादक डॉ. पीसी तामुली ने 'बच्चों के लिए वैज्ञानिक संचार' के बारे में बताया। जोरहाट

इंजीनियरिंग कालेज के भौतिक शास्त्र विभाग की डॉ. अदिती बेजबरूवा ने 'महिला और वैज्ञानिक संचार' के बारे में बताया। अपने दूसरे व्याख्यान में श्री खान ने 'प्रभावी विज्ञान लेखन' तथा श्री बसु ने 'लोकप्रिय वैज्ञानिक लेखों के संपादन' के बारे में बताया।

तीसरे दिन अपने पहले व्याख्यान में श्री बसु ने 'वीडियो स्क्रिप्ट लेखन' के बारे में जानकारी दी। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद के प्रोफेसर तथा पद्मश्री से सम्मानित प्रो. अनिल के गुप्ता ने इंटरनेट के जरिए 'प्रिंट मीडिया के जरिए जानकारी को फैलाने' के बारे में जानकारी दी। 'ग्रामीण इलाकों तक जानकारी को पहुंचाना -दायरा व अनुभव' के बारे में एनआईएफ-इंडिया के असम प्रकोष्ठ, गुवाहाटी के श्री किशोर कलिता ने जानकारी दी। असम ट्रिब्यून के पत्रकार सूर्य कुमार चेतिया ने 'वैज्ञानिक पत्रकारिता - करणीय व अकरणीय' के बारे में बताया। अपने दूसरे व्याख्यान में श्री तामुली ने 'वैज्ञानिक लेखों के प्रभावी अनुवाद' के बारे में जानकारी दी। चंद्रप्रभा नेत्र अस्पताल, जोरहाट के डॉ. नारायण बरदलै ने 'नेत्रदान' के बारे में एक जनप्रिय व्याख्यान प्रदान किया। अहमदाबाद के फिल्म निर्माता श्री गोरेया शैलेंद्र ने 'फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी के जरिए संचार' के बारे में बताया। उन्होंने स्वयं द्वारा निर्मित विभिन्न लघु वृत्तचित्रों और फिल्मों को दिखाते हुए इस सशक्त मीडिया, जो वैज्ञानिक संचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, के प्रभाव के बारे में बताया।

चौथे दिन श्री शैलेंद्र ने फोटोग्राफी के बारे में प्रदर्शन करके दिखाया। उन्होंने फोटोग्राफी के विभिन्न पहलुओं जैसे लाइटिंग, संयोजन, विभिन्न प्रकार के कैमरे व इसके गुण आदि के बारे में भी जानकारी दी। क्वीज और वास्तव में लिखने जैसी गतिविधियां भी आयोजित की गयीं, जिसकी प्रतिभागियों ने प्रशंसा की। प्रशिक्षण का समापन 21 फरवरी, 2013 को समापन समारोह से हुआ, जिसमें क्वीज प्रतियोगिता के विजेताओं को प्राम-पत्र प्रदान किया गया। 21 फरवरी, 2013 को आयोजित समापन समारोह में प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम और त्रिपुरा के 66प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र के सड़क और परिवहन तकनीक पर सम्मेलन

बायें : असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगोई दीप जलाकर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए।
दायें : सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट के प्रभारी निदेशक डॉ. आर सी बरूवा असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगोई को मोमेंटो प्रदान करते हुए।

सीएसआईआर-निस्ट ने सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क शोध संस्थान, नयी दिल्ली और पूर्वोत्तर के आठों राज्यों के लोक निर्माण विभागों के साथ मिलकर 22 से 24 फरवरी, 2013 तक मणिराम देवान ट्रेड सेंटर, गुवाहाटी में उत्तर पूर्व क्षेत्र के सड़क और परिवहन तकनीक (सीओआरटीएनई 2013) पर तीन दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन के आयोजन में ईआरडी फाउंडेशन-गुवाहाटी, मेसर्स बिटकेम-गुवाहाटी और फाइनर-गुवाहाटी ने सहयोग किया। पूर्वोत्तर राज्यों के आठ राज्यों के लोक निर्माण विभाग को एक मंच पर लाने वाला यह अपनी तरह का क्षेत्र में पहला सम्मेलन था। देश के विभिन्न संगठनों खासकर असम सरकार, अरूणाचल प्रदेश सरकार, मेघालय सरकार, नगालैंड सरकार, मिजोरम सरकार, मणिपुर सरकार, त्रिपुरा सरकार और सिक्किम सरकार के लोक निर्माण विभागों, सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट तथा सीएसआईआर-सीआरआरआई, नयी दिल्ली के वैज्ञानिक कर्मचारियों, आरआईएसटी, मेघालय के संकाय सदस्यों व छात्रों और गुवाहाटी की निजी कंपनियों जैसे मेसर्स बिटकेम, मेसर्स ओम इंफ्राकान प्रा. लि. आदि के करीब 300 प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में असम के माननीय मुख्यमंत्री तरूण गोगोई मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क शोध संस्थान के निदेशक डॉ. सुभमय गंगोपाध्याय ने की।

मुख्यमंत्री श्री गोगोई ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि अतीत में कमजोर संपर्क क्षेत्र की धीमी आर्थिक प्रगति के कारणों में से एक था। उन्होंने कहा कि सड़क संचार की प्रमुख जीवन रेखा है। यह आर्थिक प्रगति और समृद्धि का एक साधन है। उन्होंने यह भी कहा 'बेहतर संपर्क के जरिए न सिर्फ सभी क्षेत्रों में विकास किया जा सकता है, बल्कि इससे क्षेत्र को देश के अन्य हिस्सों के समकक्ष लाया जा सकता है। परिवहन के आधुनिक साधनों के जरिए आर्थिक क्षेत्र में काफी बदलाव लाया जा सकता है।' मुख्यमंत्री ने सड़कों का निर्माण करते समय जल-निकासी की उचित व्यवस्था करने पर भी जोर दिया। डॉ. गंगोपाध्याय ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि सम्मेलन में उत्तर पूर्व क्षेत्र में सड़क व परिवहन ढांचे के विकास में आड़े आ रही चुनौतियों पर चर्चा की जाएगी। सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट के प्रभारी निदेशक

डॉ. आरसी बरूवा ने अपने संबोधन में कहा 'भारत के उत्तर पूर्व क्षेत्र में आठ राज्यों में पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक संसाधन हैं, लेकिन फिर भी यह क्षेत्र देश के अन्य हिस्सों की तुलना में सभी क्षेत्रों में पिछड़ा है। उत्तर पूर्व क्षेत्र में सड़क संपर्क के विकास के लिए विभिन्न राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम जैसे एनएचडीपी, पीएमजीएसवाई, एनआरईजीए आदि सामग्री और मशीन की अनुपलब्धता, जानकारी के अभाव, तकनीक की कमी और प्रशिक्षित मानव संसाधनों की कमी के साथ ही क्षेत्र में ज्यादा बारिश, भू-स्खलन, पर्यावरण जैसे मुद्दों के कारण प्रभावित हो रहा है।' श्री बोड़ो ने संपर्क व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए बाढ़, भू-स्खलन और भूकंप से प्रभावित इलाकों में स्टील के पुलों की जरूरत पर बल दिया।

तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान नौ (9) तकनीकी सत्रों के बाद आगे देखो (समापन कार्यक्रम) का आयोजन किया गया। साथ ही ब्रह्मपुत्र नदी पर बन रहे नये शराईघाट पुल के स्थल का दौरा भी किया गया। कार्यशाला में जाने-माने अभियंताओं, वैज्ञानिकों और सरकारी अधिकारियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। सम्मेलन के दौरान एक तकनीकी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमें सीएसआईआर-निस्ट, जोरहाट, सीएसआईआर-सीआरआरआई, नयी दिल्ली, मेसर्स बिटकेम, ईआरडी फाउंडेशन, मेसर्स माकाफेरी, नयी दिल्ली, मेसर्स टेकफेब इंडिया, मेसर्स हिंदुस्तान कोलाज लि., मेसर्स पूर्वांचल सीमेंट्स लि. मेसर्स वोल्वो, मेसर्स अलकेमिस्ट टेक्नालॉजी लि., मेसर्स 3एम इंडिया लि., मेसर्स स्टारमास ने हिस्सा लिया।

बायें : असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगोई स्मारिका का विमोचन करते हुए।

दायें : प्रतिधियों का एक वर्ग।

जैविक शोध में रासायनिक सूचना पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

सीएसआईआर-निस्ट ने जैविक शोध में रासायनिक सूचना पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन 26से 28फरवरी, 2013 तक सीएसआईआर-निस्ट में किया। यह कार्यक्रम सीएसआईआर-निस्ट के जैव सूचना सुविधा के लिए जरूरी था तथा यह डीबीटी, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित था। कार्यशाला का आयोजन आधुनिक जैविक शोध में कंप्यूटर के प्रयोग के महत्व को देखते हुए रासायनिक सूचना पर जानकारी को जीव-विज्ञान के छात्रों तक पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया था। इस कार्यशाला में डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय, तेजपुर विश्वविद्यालय, बाहोना कालेज और डी आर कालेज के कुल 22 प्रतिभागियों और सीएसआईआर-निस्ट के 4 छात्रों ने हिस्सा लिया। 26फरवरी को आयोजित उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सीएसआईआर-निस्ट के प्रभारी निदेशक डॉ. आरसी बरूवा ने की। आई एंड बीडी इकाई के प्रमुख तथा बीआईएफ केंद्र के समन्वयक डॉ आर एल बेजबरूवा ने कार्यक्रम के दायरे के बारे में संक्षेप में बताया। तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रो. आरसी डेका और सीएसआईआर-निस्ट के वैज्ञानिक डॉ एमजे बरदलै ने क्रमश: 'औषधि के डिजाइन में रासायनिक सूचना' और 'फायटो-केमिकल स्क्रीनिंग' पर व्याख्यान प्रदान किया। दिन के उत्तरार्द्ध में ध्रुवज्योति गोगोई द्वारा ऑनलाइन सर्च ईंजन का इस्तेमाल करते हुए पत्रिकाओं व सूचना एकत्र करने पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दूसरे दिन की शुरूआत डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय के बायोइंफोमेटिक्स विभाग के सहायक प्रोफेसरों डॉ राजीव शर्मा और श्री सुब्रत सिन्हा के 'मालीकुलर डायनामिक्स' और 'बायोप्रोग्रामिंग इन केमइंफार्मेटिक्स' विषय पर व्याख्यान प्रदान से हुई। इसके बाद प्रेक्टिल सत्र में बायोजावा पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। अंतिम दिन असम विश्वविद्यालय के शोध सहायक डॉ पंकज चेतिया ने 'केमइंफार्मेटिक्स में कंप्यूटर की सहायता से औषधि के डिजाइन' पर एक

उद्घाटन समारोह में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आरएल बेजबरूवा प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए। साथ में प्रभारी निदेशक डॉ. आर सी बरूवा भी मंच पर बैठे हुए दिख रहे हैं।